GENIUS HIGH SCHOOL - BHONGIR

Sub: Hindi Class: VI Marks: 10

I. निम्न लिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। [5M]

लोकगीत अपनी लोच, ताज़गी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं। लोकगीत सीधे जनता के संगीत हैं। घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं ये। इनके लिए साधना की ज़रूरत नहीं होती। त्योहारों और विशेष अवसरों पर ये गाए जाते हैं। सदा से ये गाए जाते रहे हैं और इनके रचनेवाले भी अधिकतर गाँव के लोग ही हैं। स्त्रियों ने भी इनकी रचना में विशेष भाग लिया है। ये गीत बाजों की मदद के बिना ही या साधारण ढोलक, झाँझ, करताल, बाँसुरी आदि की मदद से गाए जाते हैं।

एक समय था जब शास्त्रीय संगीत के सामने इनको हेय समझा जाता था। अभी हाल तक इनकी बड़ी उपेक्षा की जाती थी। पर इधर साधारण जनता की ओर जो लोगों की

(1) लोक गीत किनसे भिन्न हैं?

(2) लोक गीतों को गाने के लिए किसकी जरूरत नहीं पड़ती?

(3) लोकगीत कब गाए जाते हैं?

(4) लोकगीत किनकी मदद से गाए जाते हैं?

(5) एक समय में लोकगीतों को क्या समझते थे?

II. निम्न लिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। [5M]

गुरु का जीवन में श्रेष्ठ महत्त्व है। गुरु ही है जो मनुष्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचाता है, उसे जीवन में सफलता प्रदान करने हेतु मार्गदर्शन करता है। हमारे ग्रंथों में गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा स्थान दिया गया है क्योंकि गुरु ही ईश्वर से मिलाने का रास्ता दिखाता है। इसलिए हमें ईश्वर से पहले गुरु के चरण स्पर्श करने चाहिए। गुरु केवल वह नहीं जो पुस्तकीय ज्ञान दे बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में जो हमारा मार्गदर्शन करे वह हमारा गुरु है। कई बार तो छोटे भी बड़ों को मार्ग दिखाकर गुरु बन जाते हैं। प्राचीन समय में गुरुओं की पूजा तक की जाती थी। लेकिन आज समय

(1) हमारे ग्रंथों में गुरु को कौनसा स्थान दिया गया है?

(2) मनुष्य को मार्गदर्शन कौन करता है?

(3) हमें ईश्वर से पहले किनके चरण स्पर्श करना चाहिए?

(4) गुरु केवल पुस्तकीय ज्ञान देकर और किसका मार्गदर्शन करता है?

(5) प्राचीन समय में गुरुओं की क्या की जाती थी?